JAMNALAL BAJAJ FOUNDATION

श्री अटलबिहारी बाजपेयी
प्रधानमंत्री–भारत
मुख्य अतिथि–१९९८

ये एक बड़ा महत्वपूर्ण प्रसंग है, मैं इसमें उपस्थित हो सका, ये मैं अपने लिए सौभाग्य की बात समझता हूँ।

देश में जो लोग रचनात्मक काम में लगे हैं, जमीन से जुड़े हैं, गांव से संबद्ध हैं, अपने ढंग से परिवर्तन के कार्य में लगे हैं, उनके कार्य का सही मूल्यांकन नहीं होता। प्रचार के साधन उनसे दूर रहते हैं। वे स्वयं तो प्रसिद्धि परान्मुख होते ही हैं, लेकिन समाज का वातावरण ऐसा है कि आज रचनात्मक कार्य को जितना महत्व दिया जाना चाहिए, नहीं दिया जाता। राजनेता प्रसिद्धि पा जाते हैं, राजनेताओं से जुड़े अपराधी भी प्रसिद्ध हो जाते हैं। यदि कोई गलत काम करता है, मर्यादा को तोड़ता है, अनुशासनहीनता का परिचय देता है, तब वो प्रकाश में ज्यादा आता है, जल्दी आता है। बदनाम हुए तो क्या हुआ, नाम तो हुआ। ये अच्छा नाम है? लेकिन आज ये हो रहा है। खोटे सिक्के ज्यादा चल रहे हैं, असली सिक्के बाज़ार में कम पड़ रहे हैं। जो ह उनका अवमूल्यन हो रहा है।

इस देश के पुनर्निमाण का काम केवल सत्ता नहीं कर सकती। सत्ता एक औजार है, उपकरण है। सत्ता और उससे प्राप्त अधिकारों का पूरा उपयोग करके समाज में सही परिवर्तन लाने का प्रयास होना चाहिए। शासन केवल कानून और व्यवस्था बनाए रखने मात्र के लिए नहीं है, यद्यपि आज तो वो कानून और व्यवस्था बनाए रखने में भी विफल सिद्ध हो रहा है। लेकिन केवल कानून व व्यवस्था की चिंता करना पर्याप्त नहीं है। लोगों को प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाना है। आर्थिक समृद्धि लानी है। सामाजिक न्याय की स्थापना करनी है। समृद्धि में और सामाजिक न्याय में सबको भागीदार बनाना है, हिस्सेदार बनाना है। ये काम केवल नौकरशाही नहीं कर सकती।

6–7 महीनों में मैने शासन तंत्र के अनेक पहलू देखे हैं, अनेक रूप देखे हैं। मन में चिंता पैदा होती है. प्रतिपक्ष में था, अच्छा था, केवल बोलने की जिम्मेदारी थी. कुछ करके दिखाने की जरूरत नहीं थी। अब दायित्व आया है, लेकिन कदम–कदम पर प्रतिरोध है। कानून कभी–कभी सही काम में भी आड़े आते हैं। आड़े न भी आए तो समस्या के समाधान को लंबा करने में वो अपना योगदान जरूर देते है. मामला अदालत में है, 'सबज्यूडिस' है. कुछ कर नहीं सकते। इसकी आवश्यकता है जरूर, सत्ता निरंकुश नहीं होनी चाहिए। उसे अपने दायरे में रहना चाहिए। लेकिन न्याय सस्ता हो, सरल हो द्रुत गति से हो इस बात की भी आवश्यकता है। नियम काम रोकने के लिए नहीं, काम को और जल्दी, आसान व सरल बनाने के लिए हैं। ये विषय बड़ा नाजुक है. मैं इस विषय पर ज्यादा विस्तार से नहीं बोलूंगा।

लेकिन जिस बात पर मैं बल दे रहा था, वो ये है कि सब कुछ सत्ता पर नहीं छोड़ा जा सकता। सत्ता अगर चाहे भी तो विकास के सारे तकाजे पूरे नहीं कर सकती। विकास केवल आर्थिक विकास नहीं है, नैतिकता की रक्षा, पारदर्शी प्रामाणिकता का वातावरण, परिश्रम की पराकाष्ठा करने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करने की तैयारी, सच्चे अर्थों में स्वराज्य, अपना राज्य है। शासन एक तंत्र है. लेकिन वो तंत्र अगर अच्छे हाथों में न हो और वो तंत्र विलंब का शिकार हो जाय तो उससे समस्याओं का समाधान नहीं मिलेगा।

राजशक्ति के साथ लोकशक्ति का जागरण आवश्यक है। राजसत्ता पर अंकुश रखने के लिए और शासन के सर्वग्रासी रूप से लोगों को मुक्त रखने के लिए भी। हम ऐसा समाज नहीं चाहते जिसमें जन्म से लेकर मृत्यु तक सरकार चिंता करे। हम स्वावलंबी समाज चाहते हैं, स्वाभिमानी समाज चाहते हैं, और इसका निर्माण सरकार नहीं कर सकती। यह रचनात्मक कार्य द्वारा हो सकता है। देश में हजारों लोग हैं। हम आज उनमें से 4 का सम्मान कर पा रहे हैं, सचमुच में हम उनका सम्मान नहीं कर रहे हैं, हम अपने को ही समाद्रित कर रहे हैं। अपने को ही वाहवाही का विषय बना रहे हैं। रचनात्मक कार्यकर्ता जैसे एकांत में, अंधेरे में जलने वाले दीपक की तरह से हैं. कभी–कभी अंधेरा बढ़ते हुए देखकर मन में निराशा होती है, भविष्य के बारे में आशंका होती है। क्या अंधेरा घटेगा? अंधेरे से लड़ने के लिए छोटे दीपकों की आवश्यकता है। गांव–गांव में ये दिया जले नि:स्वार्थ सेवा का सत्ता की विकेन्द्रीकरण का। कानून ने पंचायतें बना दीं, कुछ प्रदेशों में पंचायतें अच्छा काम कर रही हैं जैसे कुछ प्रदेशों में सहकारी समितियां अच्छा काम कर रही हैं। लेकिन कुछ प्रदेश ऐसे हैं जहां पंचायतें बनी नहीं हैं, मामला अदालत में है। किसको प्रतिनिधित्व दिया जाय, इस पर विवाद है। केंद्र से जो धन जाता है, उसका क्या होता है, इसका कोई हिसाब नहीं है। शायद उस धन को राष्ट्रीय संपत्ति समझकर कुछ लोग उपभोग में लाने में संकोच नहीं करते होंगे।

देश में धन की कमी नहीं है। ये देश अगणित संभावनाओं से भरा हुआ है। जमीन है, जल है, जन है, जानवर हैं, भौतिक साधन हैं, संपन्न हैं। लेकिन फिर भी 50 साल की आजादी के बाद हमें जहां पहुंचना चाहिए था वहां हम नहीं पहुंचे हैं। ऐसा मैं नहीं कहता कि 50 साल में कोई काम नहीं हुआ है। अगर मै गिनाना शुरू कर दूं तो लंबी सूची है। लेकिन संतोष नहीं है, समाधान नहीं है। कुछ कमी है जो खटक रही है, कुछ शूल है जो चुभ रहा है। कुछ पीड़ा है जो मर्म को स्पर्श कर रही है। और ये केवल शासन के बूते का रोग नहीं है। अब तो शासन भी एक रोग बन रहा है। लेकिन शासन छोड़कर नहीं चल सकते। जो 'विदरिंग अवे ऑफ स्टेट' का नारा लगा कर चले थे, उनकी क्या दशा हुई, ये बताने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन जो खुले बाज़ार का दर्शन लेकर आगे बढ़ रहे हैं उन्हें याद रखना चाहिए कि बाज़ार बड़ा निर्मम होता है, बाज़ार बड़ा कठोर होता है, बाज़ार हर एक की कीमत लगाता है। बाज़ार अपने भाव से लोगों को तौलता है। हमें बाज़ार नहीं हमें परिवार की आवश्यकता है, परिवार। वसुधैव कुटुंबकम। सारी वसुधा को कुटुंब मानने के लिए जो देश तैयार था वो अपने देश में कुटुंब की भावना पैदा नहीं कर पा रहा है। ये कितना दुर्भाग्यपूर्ण है।

गांधीजी ने ट्रस्टीशिप के सिद्धांत पर बल दिया था। हमारे देश में अनेकों उद्योगपति हैं, सफल उद्योगपति है। उद्योग के क्षेत्र में, व्यापार के क्षेत्र में उन्होंने ख्याति कमाई है, नाम अर्जित किया है। लेकिन उनमें से बहुत कम परिवार ऐसे हैं जिन्होंने उद्योग के साथ देश सेवा को भी जोड़ा है, समाज के परिवर्तन के काम में सक्रिय सहयोग दिया है। अपने धन का भी विनियोग किया है। बजाज–परिवार उन परिवारों में से एक है। ये हमारे लिए बड़ी अच्छी बात है। लेकिन हमें एक कदम आगे जाना है। अगर हम अराजकता नहीं चाहते, अगर हम सब कुछ सरकार के आधीन में देना नहीं चाहते तो फिर जिनके हाथ में सत्ता है, जैसे उन्हें लोगों के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए, प्रामाणिक होना चाहिए। उसी तरह से जिनके पास संपत्ति है उनमें ट्रस्टीशिप की भावना होनी चाहिए। ट्रस्टीशिप के सिद्धांत के अनुसार हम भविष्य के निर्माण की कल्पना करें, इदं न मम्। ये मैंने अर्जित किया है, ये मेरे पुरुषार्थ का फल है, ये मेरी योग्यता का परिणाम है। ये सबके सहयोग से मैंने अर्जित किया है लेकिन ये मेरा नहीं है। इदं न मम्। ये मेरा नहीं है। समाज का है। ये भावना, गांधीजी इस भावना को जागृत करना चाहते थे। बजाजजी ने इस भावना को मूर्तरूप देने का प्रयास किया। आज जब 'फ्री मार्केट' की बात हो रही है तो उसमें ये ट्रस्टीशिप का सिद्धांत अलग महत्व रखता है। उसको और बद्धमूल करने की आवश्यकता है। गांधीजी ने स्वराज्य की परिभाषा करते हुए कहा था, मैं उनके शब्दों को उद्धृत करना चाहता हूं। ये 'यंग इंडिया' में लिखा हुआ लेख है, जून 1924 का। मैं उद्धत कर रहा हूं। "My Swaraj is to keep intact the genius of our civilization. I want to write many new things but they all must be written on the Indian slate. I would gladly borrow from the West when I can return the amount with decent interest" कितनी महत्वपूर्ण बात गांधीजी ने कही है। खिड़कियां हम खुली रखें, चारों ओर से नई हवाएं, ताजी हवाएं आने दें। मगर पांव देश की धरती पर मजबूती के साथ टिकाकर खड़े हों। कहीं ऐसा न हो कि बाहर से आने वाली हवा हमें ही उड़ाकर ले जाय। देश की धरती पर मजबूती के साथ पांव रखना और इसके लिए गांव–गांव में परिवर्तन के छोटे–छोटे दिये जलाना।

लोग बदल रहे हैं, लोगों में विकास की प्यास है। अपनी दशा में वो परिवर्तन चाहते हैं, लेकिन नौकरशाही नहीं कर पा रही है। शासन एक सीमा के बाद जाकर अपना प्रभाव खो देता है. इसके लिए समाज को जागृत करना होगा। इसके लिए रचनात्मक कार्यकर्ताओं के बल को बढ़ाना होगा जो रचनात्मक कार्यकर्ता हैं, उन्हें सहयोग देना होगा, उन्हें समर्थन देना होगा। आज हम उनमें से कुछ का सम्मान करके एक सही कदम उठा रहे हैं, एक ठीक कदम उठा रहे हैं।